भारतीय वैश्विक परिषद

सप्रू हाउस

****

प्रोफेसर श्रीराम चौलिया की किताब 'फ्रेंड्स: इंडियाज़ क्लोजेस्ट स्ट्रैटेजिक पार्टनर्स'

पर

आईसीडब्ल्यूए की पुस्तक चर्चा

5 **दिसंबर** 2024

स्तुति बनर्जी: नमस्कार, माननीयों, देवियों और सज्जनों। प्रोफेसर श्रीराम चौलिया द्वारा लिखित पुस्तक, *फ्रेंड्सः इंडियाज़ क्लोजेस्ट स्ट्रैटेजिक पार्टनर्स,* पर चर्चा में आप सभी का स्वागत करते हुए मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। यह एक ऐसी किताब है जो भारत की सात प्रमुख द्विपक्षीय रणनीतिक साझेदारियों के बारे में बताती है। चर्चा की अध्यक्षता कज़ाकिस्तान, स्वीडन और लातविया में भारत के राजूदत रहे, राजदूत अशोक सज्जनहार करेंगे। हमारे दो प्रतिष्ठित चर्चाकर्ता जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग के सेवानिवृत्त प्रोफेसर बदरूल आलम और दक्षिण एशियाई विश्वविद्यालय के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. धनंजय त्रिपाठी हैं। चर्चा के बाद संक्षिप्त प्रश्नोत्तर सत्र होगा जिसका संचालन अध्यक्ष द्वारा किया जाएगा। अब मैं भारतीय वैश्विक परिषद की अपर सचिव सुश्री नूतन कपूर महावर से अनुरोध करता हूँ कि कृपया वे स्वागत भाषण दें।

नूतन कपूर महावर: प्रतिष्ठित विशेषज्ञों, राजनयिक दल के सदस्यों, छात्रों और मित्रों इस पैनल चर्चा में आपका हार्दिक स्वागत है।

मैं पुस्तक के मुख्य शीर्षक- 'फ्रेंड्सः...' पर फोकस करते हुए शुरुआत करना चाहूँगी। अट्ठाइस साल पहले जब मैं भारतीय विदेश सेवा से जुड़ी तब भी यह शब्द कूटनीतिक भाषा में, विज्ञप्तियों में, प्रभावी दस्तावेजों में, डीप स्पीक में इस्तेमाल किया जाता था। उदाहरण के लिए सोवियत संघ के साथ हमारी 1971 की संधि, जिसे 1993 में सोवियत पतन के बाद उचित रूप से बदल दिया गया था, को, मैत्री संधि कहा जाता था, जो ग्लोबल साउथ के नए स्वतंत्र उपनिवेशों के साथ गुटनिरपेक्षता एवं 'मित्रता' की नीति के अलावा भारत के शीत युद्ध काल के विदेशी संबंधों के लिए महत्वपूर्ण बन गई। कोई 1970 के 'देशों के बीच मैत्रीपूर्ण संबंधों और सहयोग से संबंधित अंतरराष्ट्रीय कानून के सिद्धांतों पर संयुक्त राष्ट्र घोषणा' का उदाहरण भी दे सकता है जो राष्ट्रों के बीच 'मैत्रीपूर्ण' संबंधों की बात करता है।

फिर कहीं- न- कहीं 'मित्र' शब्द के उलट 'भागीदार' शब्द प्रचलन में आ गया। यह एक अजीब बदलाव था- पूरी तरह से सजह बदलाव नहीं क्योंकि 'भागीदार' एक ऐसे संबंध को दर्शाता है जो लेन-देन का है, जैसा कि राष्ट्रों और लोगों के बीच संबंध एक व्यवसाय या कारोबारी या यहाँ तक कि लाभ के लिए सौदा या कोई उपक्रम हो। दूसरी तरफ, 'मित्र' शब्द बहुत सुन्दर शब्द है- यह बंधन, आत्मीयता, सौहार्द, ख्याल, विश्वास और समझ को दर्शाता है। जब मैं किसी देश को मित्र बताती हूँ तो यह अंतरराष्ट्रीय

संबंधों की पेचीदगियों से अनभिज्ञ एक आम आदमी और यहाँ तक कि एक बच्चे के लिए भी तुरंत और आसानी से समझ में आ जाता है। 'मित्र' शब्द राष्ट्रों, और सबसे महत्वपूर्ण बात, उनके नागरिकों की सकारात्मक छवि बनाता है। फिर 1970 का ' राष्ट्रों के बीच मैत्रीपूर्ण संबंध और सहयोग से संबंधित अंतरराष्ट्रीय कानून के सिद्धांतों पर संयुक्त राष्ट्र घोषणापत्र' जिसका मैंने पहले उल्लेख किया था, राष्ट्रों के बीच 'मैत्रीपूर्ण' संबंधों की बात करता है न कि 'साझेदारी' की।

आईसीडब्ल्यूए राष्ट्रों को 'मित्र' के रूप में वर्णित करने का स्वागत करता है। प्रोफेसर श्रीराम चौलिया की किताब, जिस पर हम आज चर्चा करने के लिए यहाँ एकत्र हुए हैं, इसका प्रतीक है।

कोई भी देश अकेला नहीं रहना चाहता। कोई भी देश बहिष्कृत नहीं होना चाहता। देश मित्रता के जरिए अपनी राजनीति, अर्थव्यवस्था, संस्कृति और शासन शैली के लिए निरंतर मान्यता और स्वीकृति चाहते हैं। देशों के बीच मित्रता का रणनीतिक संतोष हमेशा से महत्वपूर्ण रहा है। जरूरत पड़ने पर मेरा दोस्त किस तरह मदद कर सकता है? जरूरत पड़ने पर मैं अपने दोस्त की किस तरह मदद कर सकता हूँ? कोई दोस्त रणनीतिक क्षेत्र में मेरी कमियों के बारे में शोर मचाए बिना और मेरे सम्मान को ठेस पहुँचाए बिना उसे कैसे दूर कर सकता है? दो दोस्त एक दूसरे से किए गए वादे को कैसे निभा सकते हैं और विश्वासघात नहीं कर सकते? आम लोगों के जैसे ही देश भी अपने मित्रों से पहचाने जाते हैं। इसका यह मतलब नहीं है कि जो लोग बातचीत के लायक नहीं हैं उनसे बातचीत की जानी चाहिए। यह कि जिनके साथ संतुलित तरीके से बातचीत की आवश्यकता है उनसे सावधानीपूर्वक बातचीत करने की जरूरत नहीं है।

जैसा कि इस किताब में कहा गया है, भारत 'विश्वमित्र'- सभी का मित्र, बनने की आकांक्षा रखता है। भारत के प्राचीन ऋषि के नाम पर रखा गया यह शब्द समय- सम्मानित ज्ञान के आधार पर अंतरराष्ट्रीय संबंधों में राष्ट्र के व्यवहार की आकांक्षा को पर्याप्त रूप से दर्शाता है। भारत के लिए, यह आकांक्षा उस सहजता में प्रतिबिंबित होती है जिसके साथ वह उत्तर- दक्षिण और पूर्व- पश्चिम विभाजन को पार करते हुए जी-7 या जी-20 या ब्रिक्स के साथ जुड़ सकता है या वह सहजता जिसके साथ वह यूक्रेन- रूस या इज़रायल- फिलिस्तीन जैसे संघर्ष में किसी भी पक्ष के साथ जुड़ सकता है या सऊदी अरब- ईरान जैसे परंपरागत दोष- रेखा या 1950 के दशक में कोरियाई प्रायद्वीप पर शांति के लिए भारत के योगदान को जोड़ सकता है। यह उन मंचों में भी परिलक्षित होता है जहाँ भारत उन देशों को एक साथ लाने में सक्षम है जो जरूरी नहीं कि एक- दूसरे के करीबी मित्र हों लेकिन जब भारत के साथ मित्रता की बात आती है तो वे एकमत होते हैं, जैसे भारत- मध्यपूर्व यूरोप आर्थिक गलियारा (आईएमईसी/ IMEC) या जी- 20 में भारत की अध्यक्षता, जैसा कि किताब में भी विस्तार से बताया गया है।

यह किताब विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर, जिन्होंने इस किताब का विमोचन भी किया है, द्वारा कही गई बातों पर आधारित है कि भारत एक अग्रणी देश बनने की आकांक्षा रखता है, न कि एक संतुलनकारी शक्ति। हमें अपनी योग्यता के लिए देखा जाना चाहिए, एक सभ्य राष्ट्र के रूप में हम जो विश्व को दे रहे हैं, उसके लिए, न कि एक प्रति-संतुलन के रूप में। प्रति-संतुलन शीत युद्ध के अवशेष हैं जो विश्व के अलग- अलग क्षेत्रों में वृहद स्तर पर यूएस- यूएसएसआर विभाजन को दर्शाते हैं। इसका मतलब

यह नहीं है कि हम प्रतिस्पर्धा में विश्वास नहीं करते। हम करते हैं। हम प्रतिस्पर्धा में विश्वास करते हैं, आत्म- सुधार के लिए प्रतिस्पर्धा करने में, अपने मूल्यों को ध्यान में रखते हुए अपने हितों की रक्षा करने में और विश्विक भलाई के लिए। हम अपनी बढ़ती क्षमताओं के अनुसार जिम्मेदारियाँ उठाने में विश्वास करते हैं। हमारे पास नेतृत्व कौशल है।

प्रोफेसर श्रीराम चौलिया की किताब 'फ्रेंड्स: इंडियाज़ क्लोजेस्ट स्ट्रैटेजिक पार्टनर्स' भारत के सात मित्र देशों और इनके साथ भारत के द्विपक्षीय संबंधों के बारे में बात करती है। ये देश हैं: ऑस्ट्रेलिया, फ्रांस, इज़रायल, जापान, रूस, यूएई, अमेरिका। इसकी कल्पना के अनुसार यदि इन मित्र देशों को विश्व के मानचित्र पर बिन्दुओं से दर्शाया जाए तो यह एक लंबा चाप चिह्न बनाता है- भारत की अपनी मित्रता का चाप जिसे एक वैश्विक डोर के रूप में देखा जा सकता है। यह कौटिल्य के परिकल्पिक बाहर की ओर फैले संकेंद्रित वृत्तों या मंडलों के प्रमुख बिन्दुओं को जोड़ती है- हिन्दू दर्शन में 7 को शुभ अंक माना जाता है।

मैं एक रोचक और जीवंत पुस्तक चर्चा की प्रतीक्षा कर रही हूँ। मैं पैनल में शामिल सभी सदस्यों का स्वागत करती हूँ और उन्हें शुभकामनाएं देती हूँ। अब मैं राजदूत सज्जनहार से मंच पर आने का अनुरोध करता हूँ। धन्यवाद, महोदय।

अशोक सज्जनहार: नूतन, बेहद सारगर्भित प्रस्तुति और बहुत ही सारगर्भित टिप्पणियों के लिए बहुत- बहुत धन्यवाद। मुझे लगता है कि उन्होंने आज हमारी चर्चा के लिए मंच तैयार कर दिया है जो कि भारत की विदेश नीति के विकास के अध्ययन में किए गए बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान पर आधारित है, विशेष रूप से वर्तमान संदर्भ में।

सबसे पहले मैं आईसीडब्ल्यूए को इस आमंत्रण के लिए धन्यवाद देना चाहता हूँ। मुझे इस सत्र की अध्यक्षता करने के लिए आमंत्रित करने के लिए और आप सभी को और हम सभी को इस बहुत महत्वपूर्ण विषय पर विचार- विमर्श करने के लिए यहाँ एकत्रित करने के लिए। बेशक, मेरी पहली बधाई प्रोफेसर श्रीम चौलिया को उनके योगदान के लिए है। उन्होंने ऐसे महत्वपूर्ण विषय पर गहन समझ एवं मूल्यांकन किया है कि भारत की विदेश नीति और बाहरी संबंध, विशेष रूप से बीते एक दशक में, किस प्रकार से विकसित हुए हैं।

मुझे विश्वास है कि हम में से हर एक यह जानता है कि प्रोफेसर चौलिया एक प्रख्यात और निपुण लेखक हैं। अगर मैं गलत नहीं हूँ तो यह आपकी छठी किताब है। ठीक है ना। मैं गलत नहीं हूँ। ये एक प्रतिष्ठित टिप्पणीकार भी हैं। ये एक प्रसिद्ध विश्लेषक हैं। बेहद लोकप्रिय साप्ताहिक टीवी धारावाहिक- इंडियन डिप्लोमेसी, के प्रस्तोता हैं। इन सब के अलावा, ये विद्वान और बेहद सफल प्रख्यात प्रोफेसर भी हैं। इन्होंने अंतरराष्ट्रीय संबंध के क्षेत्र में युवा शिक्षाविदों और विद्वानों को हमारे सामने लाया है। मुझे लगता है आज उनमें से कई दर्शक के रूप में हमारे साथ मौजूद हैं।

मैं केवल कुछ बिन्दुओं पर ही बात करूँगा क्योंकि थोड़ी ही देर में लेखक के अलावा कुछ बहुत ही प्रख्यात व्यक्तित्व अपने विचार हमारे सामने प्रस्तुत करने वाले हैं। मुझे लगता है कि प्रोफेसर चौलिया ने अपनी किताब में अनूठा दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है वह यह है कि भारत को एक अद्वितीय इकाई के रूप में देखा जाना चाहए, एक ऐसा अद्वितीय इकाई जिसकी

तुलना किसी भी दूसरे देश से नहीं की जा सकती है। उदाहरण के लिए, इस बात पर बहुत सारी टिप्पणियां की गई हैं कि भारत एक साथ ब्रिक्स, एससीओ और क्वाड का सदस्य कैसे हो सकता है और क्या ये किसी- न- किसी तरह से विरोधाभासी नहीं है।

झे लगता है कि इस बात को पहचाने जाने की जरूरत है कि भारत की भूमिका क्या है। जहाँ तक ब्रिक्स का सवाल है, यह कैसे विकसित हुआ है, इसकी शुरुआत चार देशों से हुई थी, मूल रूप से बड़े विकासशील उभरते बाज़ार वाले देश जो अपने लिए बेहतर मताधिकार चाहते थे और जहाँ तक अंतरराष्ट्रीय आर्थिक और वित्तीय रूपरेखा का सवाल है, अपने लिए बेहतर जगह चाहते थे। जहाँ तक एससीओ का सवाल है, कुछ लोगों ने आरोप लगाया है कि यह चीन के प्रभुत्व वाला संगठन है। क्या भारत को वास्तव में वहाँ होने की जरूरत है? मुझे लगता है कि हमें यह समझने की जरूरत है कि एससीओ में भारत की मौजूदगी का मूल उद्देश्य चार मध्य एशियाई देशों तक पहुँचना है जो इसके सदस्य भी हैं। इसके अलावा, ज़ाहिर है, अन्य सदस्यों से मिलने की अन्य संभावनाएं भी हैं।

जहाँ तक ब्रिक्स की बात है, हमने इसे विकसित होते देखा है, यह एक आर्थिक संगठन के रूप में उभरा है, लेकिन हाल के दिनों में इसने राजनीतिकरण करने की कोशिश की है। इसके बावजूद, भारत ने बहुत स्पष्ट रूप से कहा है कि हमारे विचार में यह एक गैर- पश्चिमी संगठन हो सकता है। यह कोई पश्चिमी विरोधी संगठन नहीं है। जहाँ तक क्वाड का सवाल है, मुझे लगता है कि हमने- भारत ने बहुत स्पष्ट रूप से कहा है कि यह एक समावेशी संगठन है। यह एक स्वतंत्र और मुक्त हिंद- प्रशांत की बात करता है। यह एक समृद्ध, सुरक्षित और समावेशी की बात करता है- इसे किसी दूसरे देश के खिलाफ नहीं बनाया गया है। साथ ही, हम जानते हैं कि यह वैश्व की भलाई के लिए एक शक्ति के रूप में उभरा है और यह हिंद- प्रशांत के देशों को विकल्प प्रदान करता है।

मुझे लगता है कि जहाँ तक भारत के नज़रिए का सवाल है, इसे कई अलग- अलग दृष्टिकोणों से समझने की आवश्यकता है। इसे एक ही खांचे में नहीं रखना चाहिए। दूसरा यह है कि जबकि भारत कई बहुपक्षीय संगठनों, कई बहुपक्षीय निकायों का सदस्य है, इसके पास बहुत ठोस द्विपक्षीय साझेदारियाँ हैं लेकिन फिर भी भारत की विदेश नीति की एक परिभाषित विशेषता इसकी रणनीतिक स्वायत्तता है। इन सभी साझेदारियों के अलावा, यह रणनीतिक स्वायत्तता की नीति का पालन करने के रूप में अपनी स्थिति की बहुत उत्साहपूर्वक रक्षा करता है। प्रोफेसर चौलिया ने इसे भारत की जिद्दी मानसिकता और उसके अपने व्यक्तित्व के रूप में परिभाषित किया है। इसलिए मुझे नहीं पता कि मैं उसी अभिव्यक्ति का उपयोग करूंगा या नहीं। लेकिन मुझे लगता है कि विदेश मंत्री डॉ. जयशंकर ने जो कहा है, वह यह है कि भारत इससे बचाव की बजाय अपने मूल्यों और हितों की सक्रिए खोज के माध्यम से संबोधित करता है।

उस संदर्भ में, इसमें बहिष्कारवादी संबंध नहीं हैं और यह बहु- संरेखण की नीति का पालन करता है, जहाँ मुद्दों के एक समुच्चय के आधार पर, यह तय करता है कि क्या किया जाना है। मुझे लगता है कि हमने बीते 10 वर्षों में भी देखा है शायद (संभवत) तब से जब हमने देश में आर्थिक सुधार कार्यक्रम आरंभ किए थे, लेकिन विशेष रूप से बीते 10 वर्षों में, हमने देखा है

कि भारत आर्थिक दृष्टि से बहुत तेज़ी से आगे बढ़ा है, 10वीं या 11वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था से, यह 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में उभरा है, शीघ्र ही तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था, सबसे तेज़ी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था बन जाएगा।

इस संदर्भ में, योगदान करने की इसकी क्षमता में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। इसलिए मुझे लगता है कि यह देखने की आवश्यकता है कि भारत की रणनीतिक साझेदारियां भी इसके आर्थिक उत्थान और आर्थिक विकास के अनुरूप विकसित हुई हैं और जैसे- जैसे यह आगे बढ़ेगा, मुझे लगता है कि जैसे- जैसे इसकी अर्थव्यवस्था बड़ी होगी, इसकी महत्वपूर्ण साझेदारियां उतनी ही मजबूत, उतनी ही व्यापक, उतनी ही गहरी और उतनी ही अधिक जीवंत होंगी।

आखिरी बात जो मैं कहना चाहता हूँ वह यह है कि अगर हम द्विपक्षीय संबंधों को देखें, उदाहरण के लिए, जिस सक्रिए तरीके से प्रधानमंत्री ने विभिन्न देशों से संपर्क किया है और मैं उस पर नज़र डाल रहा था, प्रोफेसर चौलिया ने जिन सात सदस्य देशों का उल्लेख किया है, उनमें से प्राधनमंत्री मोदी ने सबसे ज्यादा बार, नौ बार, संयुक्त राज्य अमेरिका की यात्रा की है। उदाहरण के लिए, दूसरे चार सदस्य, प्रोफेसर चौलिया द्वारा पहचान किए गए चार भागीदारों के बाद दूसरे सबसे बड़े थे।

उदाहरण के लिए, जहाँ तक संयुक्त अरब अमीरात का सवाल है, उन्होंने सात बार यहाँ का दौरा किया। अब आप में से कई लोगों को यह जानकर आश्चर्य होगा कि 2015, अगस्त 2015 में उनकी यात्रा, तीन दशकों से भी अधिक समय में किसी भी भारतीय प्रधानमंत्री की पहली यात्रा थी। इसलिए तीन दशक से अधिक समय से कोई भी भारतीय प्रधानमंत्री वहाँ नहीं गया और बीते 10 वर्षों में हमने लगभग सात यात्राएं देखी हैं और यह इस बात के बावजूद है कि लगभग दो साल कोविड की वजह से चले गए। फिर जहाँ तक रूस का सवाल है, एक -दूसरे देश में आना- जाना, वह भी सात बार और यहाँ भी कोविड के दौरान कोई यात्रा नहीं हुई। फरवरी'22 से जुलाई'24 तक कोई यात्रा नहीं हुई, जब पहली यात्रा हुई थी और यदि ये अंतराल नहीं हुई होते तो यात्राओं की संख्या बहुत अधिक हो सकती थी।

जहाँ तक फ्रांस का सवाल है, हमने सात बार यात्रा की है और हमने प्रधानमंत्री मोदी एवं राष्ट्रपति मैक्रों के बीच सौहार्द एवं साझेदारी देखी है। जहाँ तक जापान का सवाल है, यहाँ भी सात बार दौरा किया गया है। वास्तव में यह पहला देश था जिसके दौरे पर जाने का फैसला प्रधानमंत्री मोदी ने 2014 में, सत्ता में आने के बाद सबसे पहले किया था। यह दक्षिण एशियाई क्षेत्र के दायरे के बाहर वाला भी पहला देश था, फोर्टालेजा को छोड़कर जहाँ वे जुलाई 2014 में ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के लिए ब्राज़ील गए थे।

तो ये सभी देश, केवल दो देश, इज़रायल, वे 1992 में राजनयिक संबंध बनाए जाने के बाद वहाँ जाने वाले पहले प्रधानमंत्री थे। 25 साल तक किसी भारतीय प्रधानमंत्री का इज़रायल दौरा नहीं हुआ था और नवंबर 2014 में जब वे ऑस्ट्रेलिया गए, तो यह किसी भारतीय प्रधानमंत्री की 28 वर्षों के बाद होने वाला ऑस्ट्रेलियाई दौरा था। मैं जो बात कहना चाह रहा हूँ वह यह है कि इन सभी देशों के साथ द्विपक्षीय साझेदारी बहुत महत्वपूर्ण रूप से बढ़ी है, लेकिन निश्चित रूप से और भी बहुत कुछ हो सकता है और शायद प्रोफेसर चौलिया जब इसके बारे में बताएंगे तो वे इनका उल्लेख करेंगे, इन द्विपक्षीय साझेदारियों के साथ- साथ वे

बहुत मजबूत भी हुई हैं क्योंकि जब आप उस आत्मविश्वास, विश्वास और उस सहजता के स्तर को विकसित करते हैं, तो दूसरे मजबूत बहुपक्षीय संगठन का निर्माण होता है।

हम 2017 में विशेष रूप से क्वाड का उदय देखते हैं। आपके पास संयुक्त राज्य अमेरिका, भारत, ऑस्ट्रेलिया, जापान हैं। आप आईपीईएफ, हिंद- प्रशांत आर्थिक रूपरेखा देखते हैं। ये सभी देश और बहुत से दूसरे देश इसमें शामिल हैं। हम आई2यू2 (I2U2), भारत, इज़रायल, यूएई, संयुक्त राज्य अमेरिका को देखते हैं। हम आईएमईसी (IMEC) देखते हैं जिसमें फिर से इनमें से कई देश शामिल हैं। ऑस्ट्रेलिया, फ्रांस, भारत, मैं कई उदाहरण दे सकता हूँ। इसलिए मैं जो कहना चाह रहा हूँ वह यह है कि जैसे- जैसे भारत आर्थिक रूप से आगे बढ़ता है, रणनीतिक साझेदारी उतनी ही मजबूत होती जाती है। द्विपक्षीय संबंध बढ़े हैं और उन्होंने बहुत से द्विपक्षीय- बहुपक्षीय संगठनों को जन्म दिया है।

तो इन्हीं शब्दों के साथ मैं कहना चाहता हूँ कि आप सभी का स्वागत करते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही है। हमारे साथ लेखक खुद हैं जो अपनी किताब के बारे में लगभग 10 मिनटों तक अपने विचार साझा करेंगे और फिर हमारे पास दो चर्चाकर्ता होंगे। मैं इस अवसर पर सबसे पहले प्रोफेसर चौलिया को आमंत्रित करता हूँ। आप मंच पर हैं और मुझे यकीन है कि हर कोई आपके विचार सुनने के लिए बहुत उत्सकु हैं।

श्रीराम चौलिया: नमस्ते। मैं हमेशा सप्रू हाउस में आकर अभिभूत हो जाता हूँ क्योंकि आप में से जो लोग इस जगह के इतिहास और वंशावली को जानते हैं, उन्हें पता है कि यह औपचारिक स्वतंत्रता मिलने से पहले से ही भारतीय विदेश नीति के बारे में सभी विचारों का उद्गम स्थल रहा है। इसलिए अंतरराष्ट्रीय अध्ययन और अंतरराष्ट्रीय मामलों पर शोध के क्षेत्र में आईसीडब्ल्यूए इस देश का एक प्रतिष्ठित संस्थान है। इसलिए जब भी मुझे यहाँ पुस्तक चर्चा के लिए आमंत्रित किया जाता है तो मैं अभिभूत हो जाता हूँ। नूतन जी और टीम को मेरा बहुत- बहुत धन्यवाद, यह मेरे लिए बहुत मायने रखता है। राजदूत सज्जनहार, राजनयिक दल के प्रमुख लोगों में से एक, वे यहाँ रहे हैं और अपनी सेवानिवृत्ति के बाद से जनता को शिक्षित कर रहे हैं। मुझे ज्यादा कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है, लेकिन मैं उनकी कई बातों से सहमत हूँ। चलिए मैं किताब के सार पर आता हूँ और बताता हूँ कि मैंने इसे क्यों लिखा और मुझे क्या लगता है कि इस किताब का मूल संदेश क्या है।

आप जानते हैं कि विशेषज्ञता और जिस तरह से हमने अंतरराष्ट्रीय अध्ययन के क्षेत्र को विभाजित किया है, हम आमतौर पर इसे क्षेत्रों या देशों के संदर्भ में करते हैं। इसलिए विद्वान एक क्षेत्र या उप- क्षेत्र पर ध्यान देते हैं और अपने लेखन करियर का अधिकांश हिस्सा उसी पर खर्च करते हैं। मेरे मामले में, मैं अधिक तुलनात्मक रहा हूँ। इसलिए मुझे भारत के अलावा किसी एक देश का विशेषज्ञ नहीं कहा जा सकता। इसलिए मैंने यहाँ जो करने की कोशिश की है, और मैंने देखा है कि साहित्य भी उसी को दर्शाता है। आपके पास एक ही खंड होगा जो पूरी तरह से जापान -भारत, पूरी तरह से ऑस्ट्रेलिया- भारत, पूरी तरह से फ्रांस- भारत, पूरी तरह से रूस- भारत और इतने सारे अमेरिका- भारत और इसी तरह इज़रायल- भारत पर होगा।

इस किताब को लिखने का विचार इस तरह से मेरे मन में आया कि मैं सोच रहा था कि वास्तव में ऐसा कोई एक भी अंक नहीं है जो हमारी सभी प्रमुख साझेदारियों या मित्रों को एक ही स्थान पर कवर करता हो। ज़ाहिर है, जब आप इतने सारे देशों को कवर करते हैं तो मेरे पास सात अध्यायों में सात केस स्टडीज़ के साथ एक लंबा- चौड़ा परिचय का भी खंड है। आपको कुछ विवरण नहीं मिलेंगें लेकिन एक दुविधा है। आप विवरण की कुछ विशेषताओं और बारीकियों को नज़रअंदाज़ कर देते हैं लेकिन बदले में आपको एक व्यापक नज़रिया मिलता है। तो यह पूरी तरह से समझौता करने जैसा था। मुझे लगा कि यह इसके लायक है क्योंकि इन सभी प्रमुख देशों के साथ हमारे प्रमुख द्विपक्षीय संबंधों को एक ही खंड में शामिल करने वाली कोई किताब नहीं है, विशेष रूप से एक अकेले लेखक द्वारा लिखी गई किताब में।

कभी- कभी आपके पास ये संपादित अंक होते हैं। इसलिए मैंने सोचा कि एक प्रकार से, जैसा कि राजदूत सज्जनहार कह रहे थे, यह किताब इस बारे में नहीं है कि हम प्रत्येक देश के साथ क्या कर रहे हैं। बल्कि किताब इस बारे में है कि इस रिश्ते का क्या महत्व है? यह संबंध भारत और साझेदार X या साझेदार Y के लिए क्या कर रहा है? और उन्हें हमारी जरूरत क्यों है? और हमें उनकी जरूरत क्यों है? और यह हमें दोनों पक्षों की आकांक्षाओं के बारे में क्या बताता है? और यह पूरी तरह से द्विपक्षीय भी नहीं है क्योंकि हम देश X के साथ जो करते हैं उसका देश Y पर भी प्रभाव पड़ेगा क्योंकि वे आपस में जुड़े हुए हैं। वास्तव में, यदि आप कवर देखें, तो मुझे लगता है कि प्रकाशक की प्रति अंत में है और मुझे उन पर हस्ताक्षर करने में प्रसन्नता होगी।

लेकिन अगर आप कवर देखें, यहाँ विस्तार से देखें, आप पाएंगे कि कैसे, उदाहरण के लिए, जापान ने हमारे लिए अपने दरवाज़े खोले, जैसा कि मैंने पहले अध्याय में दिखाया है, क्योंकि अमेरिका हमारे लिए अपने दरवाज़े खोलने को तैयार था और क्योंकि जापान अमेरिका का संधि सहयोगी है। उनके पास अर्ध- गठबंधन की अवधारणा है। उदाहरण के लिए, ऑस्ट्रेलिया और जापान प्रत्यक्ष सहयोगी नहीं हैं, लेकिन प्रशांत क्षेत्र में अमेरिकी हब- एंड- स्पोक्स नेटवर्क का हिस्सा होने के कारण, उन्हें अर्ध- गठबंधन कहा जाता है। इसलिए मैंने अर्ध-मित्र नामक एक नया शब्द बनाया है क्योंकि अमेरिकी सहयोगी होने के कारण वे एक प्रकार से हमारे मित्र भी हैं।

लेकिन ऐसा सिर्फ इसलिए नहीं है क्योंकि वे अमेरिका से सीख ले रहे हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि इनमें से कई मध्यम क्षमता वाले देश हैं, जैसा कि आप जानते हैं, मैं इस किताब में बता रहा हूँ, बहुत सारे मध्यम क्षमता वाले देश हैं। हमारे पास जापान, ऑस्ट्रेलिया, फ्रांस हैं। रूस आर्थिक कमज़ोरी के कारण, मैं इसे अब एक मध्यम क्षमता वाला देश मानता हूँ, न कि एक क्षमतासंपन्न देश। ये देश, किसी भी तरह, अपनी साझेदारी में विविधता लाना चाहते हैं क्योंकि वे अब सिर्फ एक सुरक्षा या आर्थिक गारंटर पर निर्भर नहीं रह सकते। इसलिए एक तरह से, अमेरिका की रणनीतिक विश्वसनीयता के बारे में संदेह वास्तव में भारत की साझेदारी को लाभ पहुँचाता है क्योंकि इनमें से कुछ देशों को भारत की ज्यादा जरूरत और चाहत है क्योंकि वे अपना सबकुछ अमेरिका को नहीं दे सकते।

इसी तरह, अगर आप पश्चिम एशिया या मध्य पूर्व क्षेत्र के देशों को देखें, तो ये दोनों भी, निश्चित रूप से, अमेरिका के करीबी सहयोगी/रणनीतिक साझेदार हैं। लेकिन फिर, अमेरिका की घटती विश्वसनीयता एक मुद्दा है। विशेषरूप से ट्रंप के प्रथम कार्यकाल में, मैं बताता हूँ कि कितने देशों ने विचार करना शुरू किया, ठीक है, हमें स्वयं को सुरक्षित रखने और अपनी समृद्धि के लिए मित्रता का एक व्यापक दायरा बनाने की जरूरत है। निश्चित रूप से ट्रम्प प्रशासन भी इस प्रक्रिया में तेजी लाएगा।

मैं यहाँ यह कह रहा हूँ कि भारत अमेरिका का विकल्प नहीं है बल्कि मैं यह कह रहा हूँ कि भारत इन देशों की नज़रों और दिमागों एवं हितों में एक निश्चित अंतर को कम करता है। यह इतना नहीं है कि हम इन सभी सात भागीदारों से क्या हासिल कर रहे हैं। मैं यह दिखाता हूँ कि आर्थिक, सैन्य, भू- राजनीतिक रूप से, वे किस प्रकार से हमारे उत्थान को सक्षम बना रहे हैं लेकिन यह भी है कि भारत कितना भरोसेमंद मित्र है।

दूसरी बात जो मैं आप सब के ध्यान में लाना चाहता था, कई लोग जिन्होंने किताब का नाम देखा और मित्रों के बारे में बात कर रहे थे, नूतन जी ने अंतरराष्ट्रीय संबंधों में मित्र शब्द के इतिहास के बारे में भी बात की। उनमें से कई लोग पामर्स्टन की प्रसिद्ध कहावत का उल्लेख करते रहते हैं कि मित्रता और दुश्मनी स्थायी नहीं होती। हमारे पास केवल स्थायी हित हैं, राष्ट्र हैं। अब मैंने जो अपने शोध से पाया वह थोड़ा विरोधाभासी है। इनमें से कई मित्र वास्तव में दीर्घकालिक मित्र हैं और हमने उनसे मित्रता बनाए रकी है। वास्तव में वे स्थायी मित्र हैं।

मेरे कहने का मतलब है, रूस सबसे पुराना मित्र है। आप 1960, 70 के दशक में जाएं और अब 60 साल से भी अधिक का समय बीत चुका है, हमने रूस से मित्रता बनाए रखी है। द्विध्रुवीय से बहुध्रुवीय, क्षमा करें, द्विध्रुवीय से एक ध्रुवीय और अब एक उभरती हुई बहुध्रुवीय व्यवस्था तक, रूस मित्र बना हुई है, ठीक है ना, समस्याओं के बावजूद, जैसा कि मैं इसे कहता हूँ, मजबूत आलिंगन। दूसरे भी, जैसे, अब यह 20 साल से अधिक हो गया है। इज़रायल सबसे नया है। इज़रायल, ऑस्ट्रेलिया और यूएई नए मित्र है जिनके साथ हमने थोड़े समय के बाद रणनीतिक साझेदारी की और यह बहुत तेज़ी से प्रगाढ़ हो रही है। ये साझेदारियां बहुत तेजी से बढ़ रही हैं, विशेष रूप से, ऑस्ट्रेलिया के साथ, आप जानते ही हैं।

लेकिन इनमें से कुछ पुराने हैं। जैसे, जापान कुछ समय से वहाँ है। फ्रांस बहुत समय से है। इसलिए मैं जो कहने का प्रयास कर रहा हूँ वह यह है कि भारत वास्तव में एक स्थिर मित्र है जो आसानी से अपने संबंधों को नहीं तोड़ देता। इस अर्थ में, भारत के साथ निरंतरता और पूर्वानुमान की बेहतर स्थिति है। यही इसकी शक्ति भी है। मैं बताता हूँ कि इतने सारे देश हमें क्यों चाहते हैं, क्योंकि हम अपने दोस्तों के साथ जुड़े रहते हैं। हम उन्हें नहीं छोड़ते। हम उनके साथ गंदी राजनीति नहीं करते बल्कि हमारा विचार है कि ये ऐसी संपत्तियां या खजाने हैं जिन्हें समय के साथ पोषित किया गया है।

तीसरी बात जो मैं आपको बताना चाहता हूँ, वह यह है कि मैंने इस किताब में हमारी प्राचीन भारतीय शासन कला का भी बहुत उल्लेख किया है। दोस्तों और दुश्मनों एवं मित्र- शत्रु, दुश्मन के दोस्त और दोस्त के दोस्त आदि की अवधारणाएं हमारी प्राचीन शासन कला और ज्ञान एवं सलाह का बहुत बड़ा अंग हैं जो राजनयिकों एवं रणनीतिक विचारकों द्वारा संप्रभुओं, राजाओं एवं

शासकों को दी जाती थीं। इसलिए मित्रों की धारणा एवं अपने मित्र समूह का विस्तार कैसे करें, मित्रता को प्रगाढ़ कैसे करें और इसका उपयोग विश्व या किसी अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था या अंतरसाम्राज्यीय व्यवस्था में अधिक शक्तिशाली बनने के लिए कैसे करें, यह हमारी रणनीतिक संस्ककृति का अभिन्न अंग है।

व्यवहार और लेखन में, हमने इस पर ज़ोर दिया है। मैंने इसे पूरी किताब में बताया है। इसलिए यह हमारे जीन और हमारे डीएनए में है कि हम न केवल बहुत ही साधारण तरीके से मित्रता करें बल्कि एक ऐसे तरीके से मित्रता करें जो उन्हें रणनीतिक बनाता है और जिसका लाभ हम उठा सकते हैं। मुझे लगता है कि मैंने किताब में यही बताने की कोशिश की है। इसलिए इस किताब को एक बार जरूर पढ़ें। मैं यह कहते हुए अपनी बात समाप्त करना चाहूँगा कि मैं भारत के लिए जो मार्ग दिखा रहा हूँ वह मध्यम क्षमता नहीं है बल्कि एक उभरती हुआ सक्षम राष्ट्र है जो मध्यम क्षमता वाले देशों से ऊपर है लेकिन अभी तक वह शक्तिसंपन्न नहीं हो पाया है। आगामी 20 वर्षों का यह मध्यम मार्ग, जिसे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी अमृत काल कहते हैं, में, मेरा मानना है कि हमें इन मित्रताओं की जरूरत होगी। हमें परिपक्व और तर्कसंगत होना चाहिए, भावुक नहीं। इन मित्रताओं को बनाए रखना चाहिए क्योंकि उनमें से प्रत्येक की भारत के लिए बहुत उपयोगिता है।

इसलिए मेरा विनम्र निवेदन है, विशेष रूप से युवाओं से, कि वे खबरों से प्रभावित न हों। हमें कभी- कभी कुछ मित्रों से परेशानी हो सकती है लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि मित्रता बेकार है या वे हमारे छुपे हुए शत्रु हैं। हमने इन मित्रता, इन रणनीतिक साझेदारियों को बहुत सोच- समझकर चुना है। मूल हित यहीं उलझे हुए हैं। इसलिए हमें तर्कहीन होकर अपना लक्ष्य नहीं खोना चाहिए। इसलिए हमने इन दोस्ती को बनाए रखा है और इसे बनाए रखने की जरूरत है। नहीं तो, महाशक्ति बनने की हमारी राह बाधाओं और कांटों भरी होगी।

इन अशांत 20 वर्षों से उबरने का एकमात्र तरीका यही है, जैसा कि आप जानते ही हैं, विश्व व्यवस्था बहुत ही हिंसक और अस्थिर दौर से गुज़र रही है। इसलिए हमें सुरक्षित रहने और सर्वोच्च पदों पर निर्बाध रूप से पहुँचने के लिए, शक्ति के सभी मापदंडों में चीन और अमेरिका के बराबर होने के लिए, हमें इन मित्रताओं की आवश्यकता होगी। आइए हम इन मित्रताओं को संरक्षित करें और उनमें मूल्य देखें। किसी ने मुझे बताया कि यह बुरे समय में एक बहुत ही आशावादी किताब है। मैंने कहा, हाँ, अगर आप वास्तव में हमारी मित्रता का सार देखें, तो आशावादी होने की गुंजाइश है। इसलिए मैं निराशावादियों एवं उन लोगों को चुनौती दे रहा हूँ जो कुछ खास दोस्तों पर गुस्सा निकाल रहे हैं। वास्तव में, डॉ. जयशंकर ने मेरी किताब के विमोचन समारोह में कहा कि कुछ मित्र दूसरों की तुलना में अधिक जटिल होते हैं। हाँ, वे जटिल हैं, लेकिन फिर भी मित्र हैं। धन्यवाद।

अशोक सज्जनहार: प्रोफेसर चौलिया, आपकी किताब के बारे में इन बहुत ही व्यावहारिक टिप्पणियों के लिए आपका बहुत- बहुत धन्यवाद। अब मैं प्रोफेसर मोहम्मद बदरूल आलम को आमंत्रित करता हूँ और अनुरोध करता हूँ कि वे अपने विचार हम सब से साझा करें।

मोहम्मद बदरूल आलम: बहुत- बहुत धन्यवाद। सबसे पहले, नूतन जी, डॉ. निवेदिता, डॉ. स्तुति, आईसीडब्ल्यूए परिवार, सभी को नमस्कार। राजदूत अशोक सज्जनहार, प्रोफेसर श्रीराम चौलिया, डॉ. धनंजय त्रिपाठी के साथ एक ही मंच पर आना बहुत अच्छा लग रहा है। यह किताब मुझे इतनी पसंद आई कि मैंने बीते दो हफ्तों में इसे तीन बार पढ़ डाला। सबसे पहले, मैं किताब में छपी कुछ ऐसी बातें बताना चाहूँगा जो मुझे बहुत पसंद आईं। फिर मैं बहुत दोस्ताना तरीके से थोड़ा- बहुत विस्तार में जाऊंगा। मुझे लगता है कि श्रीराम मेरे मित्र हैं, इसलिए मैं थोड़ी आज़ादी ले सकता हूँ।

मुझे लगता है कि यह एक बहुत ही साधारण सी किताब है, बहुत ही स्पष्ट, बहुत ही सहज प्रवाह वाली कहानियाँ। मुझे लगता है कि यह भारत के वैश्विक नज़रिए के साथ एक महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि के साथ बहुत ही स्पष्ट और सुस्पष्ट विश्लेषण है। इसलिए नूतन जी ने विश्वामित्र, विश्वबंधु के बारे में बात की। हम वसुधैव कुटुम्बकम और जी20 के अंतिम आदर्श वाक्य- एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य, के बारे में बात करते हैं। इसलिए मुझे लगता है और मैंने कहा कि यह एक बहुत ही साधारण सी किताब है क्योंकि उन्होंने युवराज सिंह की तरह एक ओवर में छह छक्के मारने की कोशिश नहीं की। वे बहुत सर्तक, बहुत आनुपातिक रहे।

ऐसा नहीं है कि सिर्फ ये सात देश ही भारत के मित्र हैं। हमारे मित्र हर जगह हैं, सिर्फ इसलिए कि इस खंड में अफ्रीका शामिल नहीं है या लैटिन अमेरिका शामिल नहीं है या दक्षिण अमेरिका शामिल नहीं है, इसका मतलब यह नहीं है कि वे हमारे मित्र नहीं हैं। हर कोई हमारा मित्र है और हम समावेशिता में विश्वास करते हैं। लेकिन उन्होंने जानबूझकर इन सात देशों को चुना क्योंकि उन्हें लगता है कि ये वे देश हैं जिनके साथ हमारी बहुत मजबूत साझेदारी है और उम्मीद है कि यह निकट भविष्य में भी जारी रहेगी।

मुझे लगता है कि यह एक पाठकों के अनुकूल किताब है। विशेष रूप से मुझे लगता है कि यह आईआर विशेषज्ञों, क्षेत्र अध्ययन विशेषज्ञों, विदेश नीति विश्लेषकों के लिए बहुत रुचिकर होनी चाहिए। मैं आज सुबह किसी से कह रहा था कि अगर कोई टी3 हवाईअड्डे से गुज़र रहा है, सुरक्षा जांच करवा रहा है और डब्ल्यूएच स्मिथ से उसका सामना हो जाए, या राजधानी, शताब्दी या वंदे भारत से यात्रा कर रहा हो, तो मुझे लगता है कि यह एक ऐसी किताब है जिसे पढ़ने की मैं जोरदार सिफारिश करूँगा। यह विश्व के प्रमुख देशों के साथ भारत के संबंधों की जटिलता, द्विपक्षीय, अन्योन्याश्रित प्रकृति का गंभीर विश्लेषण है।

यह भारत को दर्शाता है। मैं गिन रहा था कि प्रोफेसर चौलिया ने कितनी बार उभरती हुई शक्ति, अग्रणी शक्ति, प्रमुख शक्ति, स्विंग शक्ति, मल्टीवेक्टर शक्ति, परिवर्तनशील शक्ति जैसे शब्दों का प्रयोग किया है, जिसमें उन्होंने विदेश मंत्री जयशंकर से लेकर कौटिल्य तक, सभी का हवाला दिया है। उन्होंने किसी को नहीं बख्शा। मैं एक और बात कहना चाहता हूँ। भारत अवसरों से भरपूर देश है। हर जगह अवसर हैं। मुझे लगता है कि अगर हमारे पास यह है, तो हमें इसे दिखाना चाहिए, हमें इसका प्रदर्शन करना चाहिए। मुझे लगता है कि भारत ऐसा होने का हकदार है। जैसा कि राजदूत सज्जनहार ने कहा, भारत ने बीते 10 वर्षों में अर्जित किया है।

लेकिन अंतरराष्ट्रीय संबंधों के एक छात्र के रूप में, इस विशेष किताब के बारे में जो चीजें मुझे पसंद आई, वह मेरे अपने अनुशासन से है, अगर आपको इस विशेष किताब को मुख्यधारा के अंतरराष्ट्रीय संबंधों के सिद्धांतों के भीतर रखना या संदर्भ देना है, जिनके बारे में हम सभी जानते हैं। उदाहरण के लिए, यथार्थवादी सिद्धांत जिसके बारे में मोर्गेंथौ बताते हैं, केनेथ वॉल्श, जॉन मियर्सहाइमर शक्ति, राष्ट्रीय हित, अस्तित्व, आत्म-सहायता के बारे में बात करते हैं। मुझे लगता है कि हम सभी में यह उचित अनुपात में है।

अगर आप नवयथार्थवादी सिद्धांत की ओर बढ़ते हैं, रॉबर्ट के ओहेन, जोसेफ नाइ, जोसेफ ग्रीको आदि वे क्षमताओं के बारे में बात करते हैं। यह अग्नि-1 से अग्नि-5 से नाग, त्रिशूल, आईएनएस अरिहंत इत्यादि है। अगर आप रचनावादी सिद्धांत की ओर बढ़ते हैं, पीटर कैटजेनस्टीन, अलेक्जेंडर वेंड्टस वे सामाजिक संपर्क, सामाजिक संरचनाओं, विचारों और मानदंडों के बारे में बात करते हैं। मुझे लगता है कि हमने भी इस प्रकार की चीजों को आत्मसात किया है। अगर हम निर्णय लेने के सिद्धांत में जाते हैं, तो मुझे लगता है कि प्रोफेसर चौलिया ने ग्राहम एलिसन द्वारा तर्कसंगत अभिनेता मॉडल, एसेंस ऑफ डिसीजन के बारे में कहा है। मुझे लगता है कि हम चीजों को बहुत ही तर्कसंगत तरीके से लेते हैं। ऐसा नहीं है कि हम अचानक एक अच्छी सुबह उठते हैं और हम तय करते हैं कि क्या करना है।

अगर हम इरविंग जेनिस की तरह समूह में जाते हैं तो हम सामूहिक तरीके से काम करते हैं। उदाहरण के लिए, आज, अगर मुझे लगता है कि कोई संकट आने वाला है, उदाहरण के लिए, मुझे लगता है कि प्रधानमंत्री मोदी वहाँ होंगे, राजनाथ सिंह वहाँ होंगे, जयशंकर वहाँ होंगे, अजीत डोभाल वहाँ होंगे, तो यह एक सामूहिक निर्णय है। वे सबकी बात सुनते हैं और फिर सबसे अच्छा तरीका क्या हो सकता है? इसलिए मुझे लगता है कि अगर आप इन सभी मुख्यधारा आईआर सिद्धांतों को देखें तो मुझे लगता है कि किताब में ये सब है। इसका मतलब यह नहीं है कि यह सब समान अनुपात में है। अमेरिका अलग है, फ्रांस अलग है, इज़रायल अलग है, यूएई अलग है, जापान अलग है, ऑस्ट्रेलिया अलग है।

अब कुछ खास बातों पर आते हैं, जैसे कि उदाहरण के लिए पृष्ठ 284 में चीन को एक प्रतिद्वंद्वी, एक खतरा बताया गया है। मुझे लगता है कि व्यक्तिगत रूप से, मुझे लगता है कि प्रतिद्वंद्वी और खतरा शब्द, जैसे कि आधिपत्य, थोड़ा भारी है। मुझे लगता है कि मैं उदाहरण के लिए, रोरी मेडकॉफ या एशले टाउनसेंड के बयानों से अधिक सहज महसूस करता हूँ जो प्रतिस्पर्धी सह- अस्तित्व, उदासीन सह-अस्तित्व, संघर्षपूर्ण सह- अस्तित्व के बारे में बात करते हैं। बहुत समय पहले की बात नहीं है जब हमने हिंदी- चीनी भाई- भाई के बारे में बात की थी, फिर अलविदा, लेकिन मुझे लगता है कि हाल ही में सीमा वार्ता से पता चलता है कि चीन जैसे विरोधी के साथ भी सह- अस्तित्व संभव है।

अगली बात जो मैं कहना चाहूँगा वह पृष्ठ- 282 की तालिका- 3 के बारे में है। इन्होंने रणनीतिक और अन्य साझेदारियों के बारे में बात की। जहाँ तक रूस का सवाल है, 2000 में हमारी रणनीतिक साझेदारी थी, 10 साल बाद विशेष विशेषाधिकार प्राप्त रणनीतिक साझेदारी। मेरे कहने का अर्थ है, जब आप विशेषाधिकार प्राप्त शब्द सुनते हैं, तो आपको ऐसा लगता है- जैसे आपको

अमेरिकन एक्सप्रेस क्रेडिट कार्ड से अपडेट मिल गया हो, या इकोनॉमी क्लास से प्रीमियर इकॉनमी में, शायद अगर आप भाग्यशाली हों तो बिजनेस क्लास में चले जाएं। इसलिए मुझे लगता है कि इन बातों को अलग रखते हुए, मुझे लगता है कि ब्रिक्स और एससीओ और रूस के साथ समय- परीक्षणित दोस्ती के बावजूद भी बहुत से लोग इस बात से सहमत होंगे कि उन्होंने अच्छे और बुरे समय में हमारी मदद की है, एस-400, तेल, सब कुछ। मुझे लगता है कि अंतरराष्ट्रीय संबंधों के क्षेत्र में भी बहुत से लोग इस बात से सहमत होंगे कि जॉन्स हॉपकिन्स के जोसेफ जोफ ने हाल ही में कहा था कि- पूरा विश्व अब ढाई शक्तियों तक सिमट कर रह गया है जिनमें मुख्य रूप से अमेरिका, चीन और रूस आधी- आधी शक्ति के रूप में हैं, जो मूल रूप से बीजिंग के पीछे-पीछे चल रहे हैं।

मुझे लगता है कि अगर आप द्वितीय विश्व युद्ध के अंत को देखें, 1945 से 1949 तक, उन चार वर्षों में, द्वितीय विश्व युद्ध के अंत में अमेरिका एकध्रुवीय दुनिया थी, '49 से '89, लगभग 40, 42 वर्ष। यह एक द्विध्रुवीय विश्व था, यूएस, एसयू, संयुक्त राज्य, सोवियत संघ। फिर '90 से 2000 तक, एक बार फिर एकध्रुवीय विश्व था, यूएस एकमात्र महाशक्ति था। साल 2000 की शुरुआत में, 21वीं सदी में, फिर से यह एक बहुध्रुवीय विश्व है, दुनिया के विभिन्न हिस्सों में सत्ता के कई समूह, कई शक्तियाँ। फिर 2010 में, जैसा कि अमिताव आचार्य कहते हैं, यह एक मल्टीप्लेक्स दुनिया की तरह है, पश्चिमी आधिपत्य अभी भी मौजूद है लेकिन वैश्विक दक्षिण का उदय हो रहा है जिसकी आपको बात सुननी होगी, आपको उनका ख्याल रखना होगा।

लेकिन मुझे लगता है कि पिछले कुछ सालों में, फिर से, कुछ विशेषज्ञ तर्क देंगे, फिर से यह एक द्विध्रुवीय विश्व है। लेकिन शीत युद्ध के उस द्विध्रुवीय और इस द्विध्रुवीय के बीच का अंतर, यह ज्यादातर अमेरिका और चीन के बीच है। तीसरी बात जो मैं कहना चाहूँगा वह व्यक्तिगत रसायन विज्ञान का मुद्दा है। मुझे लगता है, बेशक, मैं शीर्ष नेताओं के बीच व्यक्तिगत रसायन विज्ञान, व्यक्तिगत सौहार्द में विश्वास करता हूँ, चाहे वह मोदी- मैक्रों, मोदी- अल्बानियाई, मोदी- इशिबा, मोदी- बाइडेन या विभिन्न देश हों। लेकिन मुझे लगता है कि कभी- कभी अगर हम चीजों पर बहुत अधिक जोर देते हैं, तो मुझे लगता है कि प्रतिक्रिया की संभावना है। जैसे, मैं मोदी- बीबी या मोदी- बेंजामिन नेतन्याहू के बारे में सोच रहा था। मेरे कहने का मतलब है, वह बहुत लोकप्रिय नेता है। वह इज़रायल में कई बार अलग- अलग समय पर प्रधानमंत्री रह चुके हैं।

लेकिन मान लीजिए कि लिक्विड पार्टी में कोई दूसरा नेता है, गैंट्ज़ या गैलेंट या कोई और। मेरा मतलब है, हमें अभी भी उसके साथ काम करने की जरूरत है। मान लीजिए कि पेरिस जैसी लेबर पार्टी सत्ता में आती है, तो हमें उसके साथ काम करने की जरूरत है। अगर कदीमा नाम की कोई पार्टी एहुद एल्मर्ट की तरह अकेले आती है, या तो अकेले या गठबंधन में, तो हमें उससे समझौता करना होगा। इसलिए मुझे लगता है कि मैं अमेरिका की तरह द्विदलीय नज़रिए के साथ अधिक सहज महसूस करता हूँ, जैसे क्लिंटन के काल में, डेमोक्रेट, आठ साल, हमारे बीच अच्छे संबंध थे। फिर जॉर्ज डब्ल्यू बुश, हमारे बीच भारत- परमाणु समझौता हुआ। फिर ओबामा आए। वास्तव में, इसका श्रेय प्रधानमंत्री मोदी को जाता है कि अपने 10 वर्षों के दौरान, उन्होंने डेमोक्रेट और रिपब्लिकन, ओबामा, ट्रम्प और बाइडेन के साथ काम किया है और फिर ट्रम्प कुछ ही हफ्तों में फिर से सत्ता में आ रहे हैं।

अगली बात जिस पर मैं बहुत जल्दी चर्चा करूँगा, वह है देसी संवाद। मुझे लगता है कि मुझे उसमें कुछ दिलचस्पी है। मुझे लगता है कि मुझे यह बहुत पसंद आया जब उन्होंने ब्रेन ड्रेन, ब्रेन बैंक, ब्रेन गेन, ब्रेन रीसर्कुलेशन के बारे में बात की, लेकिन मुझे लगता है कि मैं उनसे इस अर्थ में बहस करूँगा कि उन्होंने कहा कि, हाँ, मेरा मतलब है, यह सच है कि हमारे इज़रायल लॉबी, यहूदी लॉबी के साथ अच्छे, मजबूत संबंध हैं लेकिन यह भी सच बै कि हमारे इतावली अमेरिकियों, इटालियनों, ग्रीक अमेरिकियों, अर्मेनियाई लोगों एवं कई दूसरे देशों के साथ भी समान रूप से मजबूत संबंध हैं। इसलिए हमारे पास अमेरिकी कांग्रेस में एक बहुत शक्तिशाली भारत कॉकस समूह है। उन्होंने यूएई में भी इस देसी पहलू पर विचार किया है। मुझे लगता है कि अहलान मोदी और कई अन्य बातें। मुझे लगता है कि सॉफ्ट पावर आउटरीच के बारे में बहुत कुछ है, जैसे, मंदिर कूटनीति, हर्बल कूटनीति। मैं सरस्वती कूटनीति, एनईपी 2020, आईआईटी दिल्ली द्वारा आबू धाबी में शाखा खोलने जैसी घटनाओं को भी शामिल करना चाहूँगा।

इसलिए मुझे लगता है कि ऐसी कई चीजें हैं जिनका ध्यान रखना चाहिए। भारत- जापान, उनके पहले अध्याय में उन्होंने उदाहरण के लिए उगते सूरज और उछलते बाघ, मोर और कोइ मछली जैसे शब्दों का इस्तेमाल किया है, मैं इसे थोड़ा और मज़ेदार बना देता हूँ, सुशी और समोसा, तंदूरी और टेम्पुरा। मुझे लगता है, लेकिन समस्या यह है कि जापान, फिर से, मूल प्रश्न पर वापस लौटते हैं। क्या जापान, "एक सामान्य देश है?" क्योंकि 1991 के पहले खाड़ी युद्ध के बाद से ही यह उन्हें परेशान कर रहा है और उन्हें ऐतिहासिक अतीत, यासुकुनी तीर्थ, पाठ्यपुस्तकों के मुद्दों, नानजिंग नरसंहार, सेनकाकू द्वीप आदि के कारण चीन का ध्यान रखना है। वे इससे कैसे निपटेंगे, चीन कारक के साथ, क्योंकि यह वहाँ है, यह वहाँ एक बड़ा ड्रैगन है इसलिए उन्हें कुछ तरीकों से इससे निपटना होगा।

अगली बात जो मैं करना चाहूँगा, वह है, यूएई, मुझे लगता है कि एकमात्र संतुलन कारक, वह इसके बारे में बात करता है और साथ ही, समस्या यह है कि यदि आप वास्तव में सभी को लेकर बढ़ते हैं तो शायद आप कमतर हो जाएंगे। इसलिए मुझे लगता है कि उन्हें इस बात का ध्यान रखना चाहिए, मेरे कहने का मतलब है कि दोनों को कैसे संतुलित किया जाए, जैसे कि स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स के साथ स्ट्रिंग ऑफ पोर्ट्स आदि। तो उन चीजों का ध्यान कैसे रखा जाए। साथ ही, इज़रायल के मामले में, मुझे यह शब्द पसंद है, जब आप कहते हैं कि इज़रायल एक अटल राष्ट्र है, कई मायनों में परमाणु विषमता के कारण यह सत्य है और भारत भी एक मुखर राष्ट्र है। अगर कोई भूमिका उलट जाती है या अगर कोई देश दोनों ही है, या कोई एक है, तो क्या होगा? इसलिए मुझे लगता है कि इसे भी स्पष्ट करने की जरूरत है।

अमेरिका पर वापस लौटते हैं, अब ट्रंप 2 आ रहा है, 2.0, ट्रम्प सत्ता में वापसी कर रहे हैं, है ना? हमें नहीं पता, मेरा मतलब है, हम सब ट्रंप 1 से जानते हैं, वह बहुत पागल व्यक्ति है। एक तरह से मैं ट्रंप को पसंद करता हूँ क्योंकि वह पूर्वानुमानित रूप से अप्रत्याशित है, और प्रत्याशित रूप से पूर्वानुमानित है।तो मेरा मतलब है, वह कारोबारी है, वह जो कहता है उसका मतलब वही होता है, उसका मतलब वही होता है जो वह कहता है, ठीक है। जब वह कहता है कि मुझे जलवायु परिवर्तन की चीजें पसंद नहीं हैं, ड्रिल, बेबी, ड्रिल। उसका मतलब है वाकई उन्हें वे चीजें पसंद नहीं है, ठीक है। इसलिए यदि आप ऐसा करते हैं तो बात यह है

कि लोग सहज रूप से विचार करते हैं कि शायद वह चीन के खिलाफ होंगे। है न। लेकिन मेरे कहने का मतलब है, यह एक डबल इंजन वाली सरकार है। डोनाल्ड ट्रम्प और एलन मस्क हैं।

यह ट्रम्प और टेस्ला है। तो बात यह है कि अगर उन्हें बीजिंग में कुछ हज़ार और कारें, इलेक्ट्रिक कारें बेचने का अच्छा सौदा मिलता है, तो ठीक है, मस्क ट्रम्प को सौदा करने के लिए कह सकते हैं। शायद वह चीन में एक और निक्सन की भूमिका निभा सकते हैं। तो मेरा मतलब है, मुझे आश्चर्य नहीं होगा अगर ट्रम्प और शी जिनपिंग के बीच अल्पावधि से लेकर मध्यम अवधि तक किसी तरह ही दोस्ती हो जाए।

यही वो बातें थीं जो मुझे आप सबके साथ करनी थी। और भी बहुत सी बातें हैं जो मैं शायद प्रोफेसर चौलिया के साथ किभी और साझा करूँ। एक बार फिर से, मैं उन्हें इस बेहतरीन किताब, उनकी नवीनतम कृति, छठी किताब, के लिए बहुत -बहुत धन्यवाद देना चाहूँगा। धन्यवाद।

अशोक सज्जनहार: बहुत- बहुत धन्यवाद प्रोफेसर बदरूल आलम। मुझे लगता है कि आपने कई मुद्दे और कई सवाल उठाए हैं। प्रोफेसर चौलिया के अलावा, दर्शकों में कई ऐसे लोग भी हैं जो उन मुद्दों पर चर्चा करना चाहेंगे और शायद उन मुद्दों पर सवाल भी करेंगें जिनका आपने उल्लेख किया है। आपकी टिप्पणियों के लिए बहुत- बहुत धन्यवाद। अब मैं हमारे अंतिम वक्ता, साउथ एशियन यूनिवर्सिटी के डॉ. धनंजय त्रिपाठी का रुख करता हूँ। कृपया अपने विचार हमारे साथ साझा करें, आपके पास भी विचारों को साझा करने के लिए 10 मिनटों का समय है। धन्यवाद।

धनंजय त्रिपाठी: धन्यवाद, अध्यक्ष महोदया। मुझे लगता है कि आखिर में अपने विचार रखने के अपने अलग फायदे हैं। आप बहुत से मुद्दों को छोड़ सकते हैं। इसलिए मुझे लगता है कि अपने विचार आप सभी के साथ साझा करने के लिए 10 मिनट का समय बहुत होगा। सबसे पहले, मैं नूतन जी और आईसीडब्ल्यू को धन्यवाद देना चाहूँगा कि उन्होंने मुझे आज आप सभी के साथ भारतीय विदेश नीति पर इस बहुत ही प्रासंगिक किताब, जिसे विषय विशेषज्ञ प्रोफेसर चौलिया ने लिखा है, पर होने वाली चर्चा में शामिल होने और अपने विचारों को साझा करने का अवसर दिया। प्रोफेसर चौलिया, इस किताब के लिए मुझे आपको बधाई देनी चाहिए। ऐसे समय में जब विश्व परिवर्तन के दौर से गुज़र रहा है, इस किताब को लिखने के लिए आपका बहुत- बहुत धन्यवाद।

चीन और अमेरिका के साथ भारत के संबंधों पर बहुत चर्चा हो रही है। विशेष रूप से एशले टेलिस जैसे लोगों द्वारा टिप्पणियां लिखी जा रही हैं, जिन्होंने भारत पर अपनी हाल के टिप्पणी में वास्तव में भारत की विश्वसनीयता, मित्रता और कई अन्य मुद्दों पर सवाल उठाए हैं। इसके अलावा, यूक्रेन- रूस युद्ध और पश्चिम एशिया की स्थिति ने भारतीय विदेश नीति पर कई सवाल उठाए हैं। मुझे लगता है कि अगर आप इन बहसों और तर्कों के कुछ जवाब चाहते हैं तो यह सही किताब है।

किताब में कुछ जटिल मुद्दों को बहुत ही सरल भाषा में प्रस्तुत किया गया है, जिसे अंतरराष्ट्रीय संबंध पर विशेषज्ञता नहीं रखने वाले भी समझ सकते हैं। इस किताब में भारत के मित्र कौन है, को, परिभाषित किया गया है। जैसा कि वक्ताओं ने भी बताया, किताब में सात देशों को चुना गया है लेकिन यह भी बताया गया है कि दक्षिण अफ्रीका, ब्राजील, जर्मनी जैसे देश भी भारत के लिए बहुत प्रासंगिक हैं। चयन के मानदंड, अर्थव्यवस्था, रणनीति और भू- राजनीति का भी उल्लेख किया गया है। सात देशों को क्यों चुना गया है।

अध्याय एक में बहुत अच्छे तरीके से समझाया गया है कि भारतीय विदेश नीति, चीन, आतंकवाद और सतत आर्थिक विकास की प्रमुख चुनौतियाँ क्या हैं। साथ ही लेखक ने यह भी बताया कि इस किताब में चुने गए अधिकांश देशों की विदेश नीति में चीन भी एक कारक क्यों है। जैसा कि अमेरिका, फ्रांस और यहाँ तक कि कुछ सीमा तक रूस के लिए भी। किताब वास्तव में जापान से शुरू होती है और अध्याय का नाम है *फीडिंग कोइ फिश*। बेशक, जैसा कि प्रोफेसर आलम ने कहा है कि सुशी और समोसा क्यों नहीं। लेकिन किताब ने यह स्पष्ट किया है कि यह शीर्षक क्यों रखा गया है और प्रधानमंत्री मोदी और शिंजो आबे के बीच व्यक्तिगत कीमिया को भी समझाया गया है। किताब में बताया गया है कि भारत और जापान चीन के दो पड़ोसी हैं और चीन के प्रति उनकी कुछ आशंकाएँ हैं। कैसे शिंजो आबे ने वास्तव में जापान की विदेश नीति को अपनी शांतिवादी समझ से बदल दिया है या बाहर निकाल दिया है और इस मुद्दे को सामने लाया है कि चीन एक संभावित खतरा है और जापान को भारत में कैसे निवेश करना चाहिए। मुझे लगता है कि इस अध्याय में बहुत बढ़िया तरीके से समझाया गया है।

यह भी बताया गया कि जापान और भारत के संबंधों को प्राथमिकता क्यों नहीं दी जा रही है, जबकि जापान से भारत को बहुत अधिक ओडीए, आधिकारिक विकास मदद, दी जा रही है और जापान द्वारा भारत में बहुत अधिक निवेश किया जा रहा है। शीत युद्ध के दौरान अमेरिका का एक कारक था, जिसे बहुत अच्छी तरह से समझाया गया है।

दूसरा ऑस्ट्रेलिया है। ऑस्ट्रेलिया के साथ फिर से यह समझाया गया है कि शीत युद्ध क्यों एक कारक था और क्यों इसे भारतीय विदेश नीति द्वारा उस प्रकार से ध्यान में नहीं रखा जा रहा है लेकिन ऑस्ट्रेलिया के पास भी दो प्रमुख मुद्दे हैं और वे हैं चीन और आतंकवाद। किताब ने वास्तव में इन मुद्दों को हम सबके सामने रखा है लेकिन व्यक्तिगत कीमिया को भी स्पष्ट किया है। पहले ही चर्चा की जा चुकी है कि प्रधानमंत्री मोदी ने इनमें से कितने देशों की कितनी बार यात्रा की है और उन्होंने ऑस्ट्रेलिया को किस प्रकार की प्रासंगिकता दी है। ऑस्ट्रेलिया पर एक महत्वपूर्ण बात का उल्लेख किया जा रहा है कि भारत और ऑस्ट्रेलिया को वास्तव में व्यापार संतुलन का भी ध्यान रखना होगा और यह प्रासंगिक है।

तीसरा अध्याय अमेरिका का है और मुझे वह अध्याय बहुत पसंद आया। यह भारत- अमेरिका संबंधों का बहुत ही ईमानदारी से वर्णन करता है। मुझे लगता है कि आप इसे बहुत आसानी से नहीं समझ पाएंगे, भारत- अमेरिका संबंधों पर इस प्रकार की चर्चा। इसमें शीत युद्ध के बारे में बताया गया है और पृष्ठ सं. 132 पर इस बात की चर्चा की गई है कि शीतयुद्ध के दौरान सबसे बड़ा और सबसे पुराना लोकतंत्र एक ही पन्न पर नहीं था, इसके क्या कारण थे? फिर भारत- अमेरिका संबंधों पर चीन के दबाव

के बारे में बताया, चीन का दबाव क्या है? और यह भी बताया, जैसा कि मैंने कहा, यह बहुत ही ईमानदारी से दिया गया विवरण है, यह भी बताया गया है कि अफ़गानिस्तान और बांग्लादेश से अचानक बाहर निकलने की क्या वजह है? मुझे लगता है कि भारत- अमेरिका संबंधों के बीच इन महत्वपूर्ण मुद्दों में से कुछ पर बहुत अच्छी तरह से चर्चा की गई है। यह केवल प्रशंसा के बारे में नहीं है, बल्कि महत्वपूर्ण मुद्दों पर भी चर्चा की जा रही है।

बेशक, किताब में अगला विषय रूस है और जैसा कि बताया गया है, सोवियत संघ से लेकर रूस तक, यह भारत के सबसे पक्के दोस्तों में से एक रहा है। किताब की शुरुआत राजनाथ सिंह की मॉस्को यात्रा से होती है, जब गलवान घाटी में घटना हुई थी और रूस ने भारत के लिए सैन्य आपूर्ति में तेज़ी लाई थी। उस समय यूक्रेन- रूस युद्ध के दौरान बहुत सारे सवाल उठाए गए थे कि भारत यूक्रेन का समर्थन क्यों कर रहा है। मुझे लगता है कि कुछ जवाब इस अध्याय में हैं। कृपया इसे पढ़ें।

अगला नाम है फ्रांस। मुझे फ्रांस पर चर्चा बहुत पसंद आई और प्रोफेसर चौलिया ने बताया कि फ्रांस ने हमेशा यूरोप में एक बहुत ही स्वतंत्र स्थिति बनाए रखी है। यह एक बहुत ही स्वायत्त मानसिकता है और एक महान शक्ति की मानसिकता है। वर्ष 1974 में, 1998 में, जब भारत ने अपना परमाणु परीक्षण किया था, तब फ्रांस कभी भी आलोचनात्मक पक्ष में नहीं रहा है और फ्रांस और भारत हिंद- प्रशांत में दो बहुत ही प्रासंगिक देश हैं।

अध्याय छह, छठा भागीदार इज़रायल है, और यह बहुत अच्छी तरह से समझाया गया है कि कैसे भारत ने आतंकवाद की आलोचना की है लेकिन साथ ही दो राष्ट्र समाधान का समर्थन भी किया है। फिर से भारत- इज़रायल संबंधों का बहुत ईमानदार वर्णन है, और किताब में इस बात का उल्लेख है कि कैसे भारत- इज़रायल सैन्य संबंध आगे बढ़ सकते हैं लेकिन इसमें एक अमेरिकी मुद्दा है। सातवां है यूएई और यह बताया गया है कि कैसे अनुच्छेद 370 के निरसन के दौरान, पाकिस्तान ने यूएई और सऊदी अरब को भारत की आलोचना करने के लिए मनाने की पूरी कोशिश की और कैसे भारत ने कूटनीतिक रूप से ऐसा होने नहीं दिया। यूएई कश्मीर और भारत के अन्य हिस्सों में निवेशकों में से एक है और यूएई को आतंकवाद की भी चिंता है।

प्रोफेसर चौलिया, एक शानदार किताब। प्रासंगिक विषय और समय पर प्रकाशन तीन ऐसे वाक्यांश हैं जिन्हें मैं इस किताब के लिए प्रयोग करना चाहूँगा। मैं यह भी उल्लेख करना चाहूँगा, समापन से पहले, कि युवा दर्शकों के लिए, मैं कहूँगा कि तीनों किताबें एक साथ पढ़ने की जरूरत है। एक, फिर से, प्रोफेसर श्रीराम चौलिया द्वारा, और वह है *द मोदी डॉक्ट्राइन*। मुझे लगता है कि दूसरी किताब भारतीय विदेश मंत्री डॉ. जयशंकर की है, जिसका नाम है 'व्हाई भारत मैटर्स'। और फिर यह किताब। अगर आप इन तीनों किताबों को पढ़ेंगे, तो आपको समकालीन भारतीय विदेश नीति की बहुत ठोस और व्यापक समझ मिलेगी। मुझे लगता है कि ये तीनों किताबें भारत और विदेशों में अंतरराष्ट्रीय संबंधों के विद्वानों के साथ बहुत लंबे समय तक रहने वाली हैं।

आखिर में, मैं किताब में लिखे एक वाक्य के साथ अपनी बात समापन करना चाहूँगा और वास्तव में, नूतनजी ने पहले ही खूबसूरती से संक्षेप में बताया है कि "मित्र" का क्या अर्थ है। लेकिन मुझे लगता है कि किताब में उन्होंने जो सार प्रस्तुत किया है और उन्होंने कहा, किताब में संक्षेप में कहा गया है कि भारत मित्रों के बिना काम नहीं चला सकता, क्योंकि वह विश्व में एक अग्रणी

शक्ति के रूप में अपनी नियति को स्वीकार करता है। भारत आज जिस प्रकार की शक्ति है और कल जो होगा, वह उसके मित्रों के चयन और इन मित्रों के साथ सहयोग के रूप में परिलक्षित होता है। आपका बहुत- बहुत धन्यवाद।

अशोक सज्जनहार: प्रोफेसर धनंजय त्रिपाठी, आपकी टिप्पणियों के लिए आपका बहुत- बहुत धन्यवाद। आपने उन सभी तत्वों पर विस्तार से चर्चा की है जिन्हें प्रोफेसर श्रीराम चौलिया ने किताब में प्रस्तुत किया है। मैं लेखक महोदय और सभी वक्ताओं से बहुत कम समय दे पाने के लिए क्षमा मांगता हूँ। आयोजकों से मुझे पता चला है कि हमारे पास इतना ही समय है और हम कार्यक्रम को और आगे नहीं बढ़ा सकते। मुझे विश्वास है कि यहाँ हर कोई प्रश्नोत्तर सत्र का बेसब्री से इंतजार कर रहा होगा क्योंकि यही वह सत्र है जो इस विषय को और भी सार्थक बनाता है। मुझे लगता है कि इसे एक संवादात्मक सत्र होना चाहिए। हमारे पास लगभग 10 मिनट का समय है। मैं एक साथ तीन प्रश्नों को ले सकूँगा। इसलिए कृपया संक्षेप में प्रश्न पूछें और फिर मैं लेखक महोदय को उत्तर देने की जिम्मेदारी दे दूँगा।

चलिए तो फिर शुरु करते हैं। मुझे एक हाथ ऊपर उठा हुआ दिख रहा है। अब दो और हाथ ऊपर उठे। तो जल्दी से सवाल पूछ लेते हैं, एक सवाल मेरे पास भी है जिसे मैं पूछना चाहता हूँ। पहले अपना अपना सवाल पूछ लेता हूँ और फिर मैं आप सबको बारी- बारी से मौका दूँगा। पहला, श्रीराम, इस किताब में, हम यह पाते हैं कि आपने एक भी पड़ोसी मुल्क, सार्क देश, बिम्सटेक के देश, न ही विस्तारित पड़ोस, यानि मध्य एशिया से एक भी देश को शामिल नहीं किया है। बेशक, आप संयुक्त अरब अमिरात को विस्तारित पड़ोसी देश मान सकते हैं। लेकिन शायद इसे थोड़ा बढ़ा- चढ़ा कर बताया जा रहा है, आसियान से नहीं है। आप इसका श्रेय किसको देते हैं? मेरे पास कुछ अन्य टिप्पणियाँ भी हैं शायद मैं उन्हें इसके बाद चाय पर चर्चा के दौरान आपसे साझा करूँ। तो चलिए प्रश्नोत्तर सत्र का पहला सवाल लेते हैं। जी हाँ पूछिए।

अज्ञात वक्ता: दरअसल, यही मेरा सवाल था। सिंगापुर क्यों नहीं, आसियान या पड़ोस का कोई देश नहीं?

अशोक सज्जनहार: अच्छी बात है, ठीक है। अब हम इधर से सवाल लेते हैं, जी हाँ पूछिए।

यश चंदन: आप सभी को मेरा नमस्कार। मेरे प्रश्न है, निश्चित रूप से लेखक महोदय से। गैर- परंपरागत, गैर- रणनीतिक सुरक्षा संकटों जैसे महामारी, साइबर जोखिम, प्राकृतिक आपदाओं आदि से निपटने के लिए भारत की रणनीतिक साझेदारी में आप कितनी संभावना देखते हैं? और क्या आप रणनीतिक साझेदार के साथ संबंधों पर विचार करते समय इन खतरों और दूसरे स्पष्ट खतरों के बीच किसी प्रकार का द्वंद्व पाते हैं? धन्यवाद।

अशोक सज्जनहार: जी हाँ, शायद आप अपना परिचय देना चाहेंगे और फिर कोई दूसरा व्यक्ति अपना प्रश्न पूछ सकता है।

यश चंदन: जी हाँ, मैं नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी, सोनीपत में तृतीय वर्ष का छात्र हूँ। मेरा नाम यश चंदन है।

अशोक सज्जनहार: अच्छी बात है। मुझे आखिर में एक व्यक्ति नज़र आ रहे हैं। जी हाँ, अब आपकी बारी है।

सरबजीत डुडेजा: मेरा नाम डॉ. सरबजीत डुडेजा है। प्रोफेसर चौलिया, हम दावा कर रहे हैं कि ये हमारे सात मित्र हैं। क्या आप कह सकते हैं कि वे भी ऐसा ही मानते हैं- मतलब, ये सात देश मानते हैं कि वे भारत के मित्र हैं? दूसरा, हम वसुधैव कुटुम्बकम विश्वगुरु होने का दावा कर रहे हैं। तो फिर हम अपने पड़ोसी देशों के साथ मित्रता क्यों नहीं निभा पा रहे हैं? ज्यादातर पड़ोसी देश शत्रुतापूर्ण हैं। धन्यवाद।

अशोक सज्जनहार: आखिर में, जी हाँ, आप अपना सवाल पूछें।

समर रॉय: मंच पर उपस्थित सभी गणमान्य व्यक्तियों को नमस्कार। प्रोफेसर श्रीराम चौलिया।

अशोक सज्जनहार: कृपया अपना नाम बताएं।

समर रॉय: मेरा नाम समर रॉय है और मैं अंतरराष्ट्रीय संबंध विषय का छात्र हूँ। सर, आशावाद, केवल आशावादी होने के लिए, क्योंकि यदि हम थोड़ा भी आगे बढ़ जाते हैं तो हम आशावाद पूर्वाग्रह में भी लिप्त हो सकते हैं। मैं ऐसा क्यों कह रहा हूँ? क्योंकि एस डी मुनि सर ने कहा है कि भारत के पड़ोसी संबंधों की सफलता और उनके टूटने के बीच उतार- चढ़ाव से जूझते रहते हैं। तो क्या भारत बांग्लादेश की पराजय जैसी स्थितियों के लिए तैयार था या उसे रंगे हातों पकड़ा गया? और क्या आपको लगता है कि यब बात भारत के उभरती हुई शक्ति से महाशक्ति बनने में सबसे बड़ी बाधा बनने जा रही है?

अशोक सज्जनहार: धन्यवाद, आप जानते हैं, यह एकमात्र प्रकार है.... जी हाँ, कृपया अपना सवाल पूछिए।

लीना डे गुप्ता: मैं प्रोफेसर लीना डे गुप्ता हूँ। मैं तुलनात्मक शिक्षाविद् हूँ और मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुई कि आप अपने विश्लेषण में तुलनात्मक विधा का उपयोग करते हैं। मैं जानना चाहती हूँ कि क्या आपने उन देशों के बारे में बात की है जिनके साथ हम बहुत मित्रवत थे, भारत, आज़ादी के तुरंत बाद, कनाडा की तरह था, ट्रूडो के पिता भारत के बहुत करीबी थे और इंग्लैंड भी भारत के बहुत करीब था लेकिन क्या आपने चर्चा की है कि वे क्यों किनारे हो गए या दूसरे देश भी शामिल हैं? धन्यवाद।

अशोक सज्जनहार: ठीक है, तो ये सारे प्रश्न हैं और आपके पास जवाब देने के लिए पांच मिनट का समय है।

श्रीराम चौलिया: जी हाँ। महोदय। यह भारतीय कूटनीति टीवी शो के रैपिड- फायर राउंड की तरह होने जा रहा है। किताब में केस स्टडी के रूप में कोई पड़ोसी देश या विस्तारित पड़ोसी देश को शामिल नहीं किया गया है। महोदय, मैं वास्तव में विदेश मंत्रालय द्वारा हस्ताक्षरित रणनीतिक साझेदारियों की आधिकारिक सूची के साथ गया था और हमने वास्तव में किसी भी पड़ोसी देश के साथ अनौपचारिक रूप से रणनीतिक साझेदारी की घोषणा नहीं की है। जब शेख हसीना की पिछली सरकार बांग्लादेश में थी, तो हमारे विदेश सचिव हर्षवर्धन श्रींगलाजी ने कहा था कि यह एक रणनीतिक साझेदार से कहीं अधिक है। लेकिन अन्यथा, आधिकारिक रूप से हस्ताक्षरित, अभी उनमें से लगभग 36 हैं, और वे सभी किताब के अनुलग्नक में दिखाए गए हैं।

इसलिए मैंने उस सूची को देखा और फिर उनमें से मैंने उन सात देशों को चुना जो मुझे लगता है कि रक्षा, अर्थव्यवस्था और भू-राजनीति के मामले में सबसे मजबूत थे। इसलिए इसका मतलब पड़ोसी देशों के महत्व को कम करना नहीं है, बल्कि यह है कि हमारे उत्थान के लिए, औपचारिक कारण के अलावा, एक और वैचारिक कारण भी है। हमारे उत्थान के लिए, हमें विश्व के दूर-दराज वाले देशों में अपने पदचिह्न और प्रभाव का विस्तार करने की जरूरत है। एक महान शक्ति या महाशक्ति की परिभाषा एक ऐसा देश है जो अपने तटों से दूर महत्वपूर्ण प्रभाव रखता है। इसलिए पड़ोसी देश हमें ऐसा करने में सक्षम नहीं बना सकते।

इसलिए अगर आप मित्रता के इस विस्तारित क्षेत्र के भूगोल को देखें, जिसके बारे में मैं बात कर रहा हूँ तो यह विश्व के लगभग पांच से छह उप- क्षेत्रों को भी कवर करता है। यही मेरा मुद्दा था, कि इस लॉन्चपैड के जरिए, हम विश्व के विभिन्न उप- क्षेत्रों में अधिक प्रभाव और उपस्थिति दर्ज करने में सक्षम हैं। वे हमारे प्रभाव को और आगे बढ़ाने में मदद करते हैं। इसलिए मैं पड़ोस पर ध्यान नहीं दे रहा था। लेकिन जिस प्रकार से हम इन देशों के साथ साझेदारी करते हैं, उसमें पड़ोस का महत्व तो है ही।

गैर- परंपरागत खतरे, महामारी, जलवायु परिवर्तन, क्या इन मुख्य रणनीतिक साझेदारों के साथ इनका समाधान किया जा सकता है? ठीक है, इनमें से कुछ द्विपक्षीय संबंधों की गहराई इतनी मजबूत है कि हम इनमें से कुछ मुद्दों का समाधान करते हैं। लेकिन मैं इन्हें परंपरागत सुरक्षा मुद्दों से ऊपर नहीं रखूँगा क्योंकि हम कई देशों के साथ महामारी सार्वजनिक स्वास्थ्य और जलवायु परिवर्तन जैसे सहयोग करते हैं, मेरा मतलब है, सिर्फ ये ही नहीं और इनमें से कुछ, वास्तव में, मुझे याद नहीं आ रहा है, क्या यह डेनमार्क था या मुझे याद नहीं आ रहा है, छोटे यूरोपीय देशों में से एक है जिसके साथ हम यह भी कहते हैं कि हमारी हरित रणनीतिक साझेदारी है। मेरे लिए, यह एक क्लासिक रणनीतिक साझेदारी जितनी नहीं है क्योंकि इसमें पर्याप्त रक्षा घटक नहीं है। वहाँ पर्याप्त भू- राजनीतिक घटक नहीं है, है ना। इसलिए मुझे कुछ को छोड़ना पड़ा। लेकिन गैर- परंपरागत क्षेत्र हैं।

इस मामले में भी अधिकांश लोग इज़रायल को कड़ी सुरक्षा और आतंकवाद-रोधी और रक्षा के संदर्भ में ही देखते हैं, है न। लेकिन देखिए कि उन्होंने हमारे देश में कृषि के साथ क्या किया है। यह हमारे किसानों की उत्पादकता में सुधार के लिए एक असाधारण योगदान है। ऐसा बहुत से गैर- परंपरागत क्षेत्र हैं जिनमें इज़रायल और भारत सहयोग करते हैं। लोग इस पर उतना ध्यान नहीं देते लेकिन किताब के अध्यायों में इस पर बात की गई है।

क्या भारत इन मित्रों के शीर्ष सात सूची में शामिल है? यह एक दिलचस्प सवाल है। मुझे नहीं पता कि इन सभी देशों में वे शीर्ष सात या शीर्ष पांच की सूची में शामिल हैं। लेकिन भारत निश्चित रूप से उनमें से प्रत्येक के लिए शीर्ष पांच में शामिल होगा। वास्तव में, महान शिंजो आबे ने एक बार भविष्यवाणी की थी कि जापान- भारत संबंध एक दिन उनके लिए जापान- अमेरिका संबंध से भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाएगा, जो कि मुख्य सुरक्षा गठबंधन है, है न। इसलिए मुझे लगता है कि इन सभी देशों के लिए, इसमें कोई संदेह नहीं है कि भारत वहाँ सबसे ऊपर है। यह इनमें से अधिकांश देशों के लिए शीर्ष तीन भागीदारों में से एक

भी हो सकता है। हमें वास्तव में यह पता लगाना होगा कि क्या उन्होंने वास्तव में रैंक ऑर्डरिंग दी है। लेकिन अगर वे रैंक ऑर्डरिंग करते हैं तो भारत वहाँ सबसे ऊपर होगा।

क्या भारत मायने रखता है- माफ करें, किताब में आशावाद पूर्वाग्रह है। क्या कोई आशावाद पूर्वाग्रह है? क्या मैं इन मित्रों के लाभों और उपयोगिता के बारे में बहुत भोला हूँ? वास्तव में यदि आप अध्यायों को पढ़ते हैं तो मैं उन सभी के साथ होने वाली समस्याओं के बारे में बात करता हूँ, उनमें से बहुतों के साथ, और मैं इस बारे में भी बात करता हूँ कि हमने उनसे कैसे निपटने की कोशिश की है। मैं- जैसा कि कहा जा रहा था कि यह हमारे संबंधों का स्पष्ट प्रतिबिंब है। मैं नकारात्मक पहलुओं का उल्लेख करता हूँ और जहाँ हम समन्वय करने में सक्षम नहीं है। म्यांमार और बांग्लादेश जैसे देशों में अमेरिका के साथ इसका क्लासिक उदाहरण है। हम निराश हुए हैं और हम समन्वय करने में सक्षम नहीं है। मेरी आशा है कि शायद ट्रम्प के इस नए कार्यकाल में हम इन मामलों पर अमेरिका के साथ पहले की तुलना में बेहतर समन्वय करने में सक्षम होंगे। इसलिए मैं अति- आशावादी नहीं हूँ, लेकिन हमें इस आशावाद की आवश्यकता है क्योंकि उभरती हुई शक्तियाँ निराशावाद के आधार पर नहीं बढ़ सकती हैं। इसके बारे में विचार करें।

हमें इन मित्रों का सम्मान करना चाहिए। यही मेरी अंतिम बात है कि वे किस मुद्दे पर अडिग हैं। कभी- कभी हम उनसे असहमत होने के लिए सहमत होते हैं और यह ठीक है। पूर्व में मित्र देश, कनाडा और अन्य- महोदया, मैं आपको पूर्व में मित्र देश का एक बहुत ही विरोधाभासी उदाहरण देता हूँ। यह चीन गणराज्य है। तब तक- वास्तव में, हमने वर्ष 2005 में उनके साथ एक रणनीतिक साझेदारी पर हस्ताक्षर किए हैं। भारत- चीन रणनीतिक साझेदारी थी। समकालीन लेंस से विश्वास करना बहुत कठिन लगता है, लेकिन वे भी दिन थे। यह शी जिनपिंग से पहले का युग है। वे इतने आक्रामक, इतने आक्रामक और इतने आधिपत्यवादी नहीं थे, जितने अब हो गए हैं। इसलिए इनमें से कुछ चूक जाते हैं। इनमें से कुछ साझेदारियाँ चूक जाती हैं। मुझे नहीं लगता कि हमने आधिकारिक तौर पर बाहर जाकर चीन के साथ रणनीतिक साझेदारी को सार्वजनिक रूप से टुकड़े- टुकड़े कर दिया है, लेकिन यह चूक गई है। चीन के भारत का रणनीतिक साझेदार होने का कोई सवाल ही नहीं है। चाहे हम इसे प्रतिद्वंद्वी कहे या विरोधी, यह निश्चित रूप से एक शब्दार्थ संबंधी बात है लेकिन मेरा मूल तर्क यह है कि वे रास्ते में इसलिए खड़े हैं क्योंकि वे नहीं चाहते कि भारत उनके बराबर हो।

उनकी मानसिकता शून्य-योग वाली है और हमें इसे स्वीकार करना होगा। इसके साथ काम करना होगा और अपने मित्रों के साथ मिलकर काम करना होगा ताकि हम उनका प्रतिकार कर सकें। इसलिए, पहले, कनाडा कभी भी स्पष्ट कारणों से रणनीतिक साझेदार नहीं रहा है, जैसा कि आप जानते हैं कि 1970 और 80 के दशक से खालिस्तान मुद्दे पर हमारे उनके साथ विवाद रहे हैं। हमने कनाडा के साथ कभी भी रणनीतिक साझेदारी पर हस्ताक्षर नहीं किए हैं। हम चीन के साथ ऐसा कर सकते हैं, लेकिन कनाडा के साथ नहीं। क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि उनके साथ हमेशा से कितनी खराब स्थिति रही है? और किसी भी कारण से, भले ही अमेरिका ने हमारे प्रति और अमेरिकी सहयोगियों एवं यूरोपीय देशों के प्रति गर्मजोशी दिखाई हो, लेकिन कनाडा के लोग अपनी स्वयं की विकृत और पेचीदा घरेलू राजनीति के कारण ऐसा नहीं कर पाए हैं। मुझे आशा है कि एक दिन हम उन्हें

अपना मित्र कह सकेंगे लेकिन रणनीतिक साझेदारी के बारे में विचार करने से पहले हमें उनकी तरफ से बहुत से सुधारात्मक उपायों की आशा करनी होगी। सबसे करीबी रणनीतिक या सबसे अच्छे दोस्त को भूल जाइए, मेरे कहने का अर्थ है- इस मामले में दिल्ली अभी दूर है।

अशोक सज्जनहार: अच्छी बात है, जल्दी से, एक आखिरी सवाल ले लेते हैं।

अज्ञात वक्ता: सर, मैं एक छात्र हूँ और अंतरराष्ट्रीय संबंधों का अध्ययन कर रहा हूँ। मैं पूछना चाहता हूँ कि, एक विश्वमित्र के रूप में भारत अपने मित्र देशों के साथ मिलकर वैश्विक ज्ञान पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण किस प्रकार से कर सकता है?

श्रीराम चौलिया: मुझे नहीं पता, यह एक बहुत ही जटिल अवधारणा लगती है लेकिन मैं बस इतना कहूँगा कि हमारे पास एक वैश्विक नज़रिया है। हमारे पास ऐसे देश हैं जो हमारे वैश्विक नज़रिए को साझा करते हैं। जैसे, इस सूची में मैं फ्रांस का नाम लूंगा, वैश्विक नज़रियों का क्लासिक साधाकरण एवं हितों का कोई टकराव नहीं। इसलिए हम विश्व में इन अवधारणाओं को आगे बढ़ाने हेतु उनके साथ काम करते हैं और इनमें से कई देश शायद अमेरिका को छोड़कर और हम नहीं जानते कि इस पर अमेरिका की क्या स्थिति है, इनमें से कई देश एक बहुध्रुवीय वैश्विक व्यवस्था चाहते हैं। इसलिए वे उस स्तर पर हैं, अवधारणाओं और ज्ञान के स्तर पर, हम उनके साथ हैं और हितों का संमिलन है। हम विश्व मंच पर इन मूल्यों को बढ़ावा देने का प्रयास करते हैं। यह केवल एक चिरकालिक रक्षा और चिरकालिक व्यापार एवं निवेश नहीं है, बल्कि ठोस विचार हैं जिन्हें हम बढ़ावा देते हैं और मैंने अपनी किताब में यह तर्क दिया है कि ये मित्रताएं हमारी सौम्य शक्ति (सॉफ्ट पावर) और विश्व मंच पर हमारी छवि को बेहतर बनाने में भी मदद करती हैं।

इसलिए ज्ञान के संदर्भ में मुझे नहीं पता कि हम संयुक्त रूप से किसी प्रकार का ज्ञान सृजन कर रहे हैं या नहीं, लेकिन निश्चित रूप से अवधारणाओं के स्तर पर यदि अनुरूपता नहीं है तो संमिलन है और हम इन विचारों और मूल्यों को बढ़ावा देते हैं। इससे हमें नैतिक शक्ति के रूप में भी देखा जाता है जिसमें एक निश्चित, हम अंतरराष्ट्रीय संबंधों में कुछ नैतिक दृष्टिकोण लाते हैं और यदि हमारे एक से ज्यादा मित्र हमारे विचारों को दोहराते हैं, जैसे- प्रधानमंत्री मोदी का यह विचार कि यह युद्ध का युग नहीं है, जिसे हमारे कई प्रमुख राजनीतिक साझेदारों ने भी दोहराया है। इससे हम जो संदेश विश्व को देना चाहते हैं, उसमें सफल होते दिखते हैं और विश्व को यह दिखाने में भी मदद मिलती है कि हम वैश्विक व्यवस्था की बड़ी समस्याओं का समाधान तैयार कर रहे हैं और मित्रों के साथ मिलकर जब हम ये काम करते हैं तो इसका प्रभाव हमारे अकेले चलने या सिर्फ स्वयं के लिए काम करने से कहीं ज्यादा पड़ता है। इसलिए मुझे लगता है कि उस स्तर पर कुछ संमिलन है।

अशोक सज्जनहार: बहुत- बहुत धन्यवाद। अब हम कार्यक्रम को समाप्त करने वाले हैं। सबसे पहले मैं आईसीडब्ल्यूए, नूतन और स्तुति, आज की इस पुस्तक चर्चा की व्यवस्था में शामिल हर एक व्यक्ति, यहाँ आने वाले आप सभी लोगों का और बेहद दिलचस्प प्रश्नोत्तर सत्र का और निश्चित रूप से हमारे लेखक और पैनल में शामिल सदस्यों का धन्यवाद करता हूँ। मैं जिस तरह से इस किताब को देख रहा हूँ, पढ़ने के लिए यह एक बहुत अच्छी किताब है। मुझे भी लगता है कि यह विद्वानों, अभ्यार्थियों और

शोधकर्ताओं के लिए बहुत उपयोगी है। श्रीराम, किताब को लिखने में आपके द्वारा किया गया शोध कार्य को देख कर, जैसा कि प्रोफेसर बदरूल आलम ने भी कहा था, मैं भी, इस किताब से बहुत प्रभावित हुआ हूँ।

आपकी किताब में बहुत से अंतरराष्ट्रीय विद्वानों का उल्लेख किया गया है, फुटनोट्स दिए गए हैं, मुझे लगता है कि उनकी संख्या 500 या उससे भी अधिक हैं। इसलिए मुझे लगता है कि यह वास्तव में संक्षिप्त किताब है और इसमें बहुत सारी उपयोगी जानकारी दी गई है। केवल जानकारी ही नहीं बल्कि बहुत ही विश्लेषणात्मक एवं सभी मुद्दों को सामने लाने वाली जानकारी दी गई है। अब, मै केवल दो मुद्दों पर बात करने का प्रयास करूँगा जो उठाए गए थे, एक प्रोफेसर बदरूल आलम द्वारा, जब उन्होंने कहा कि ये व्यक्तिगत संबंध, क्या वे साझेदारी को आगे बढ़ाने में बाधा बन सकते हैं?

मुझे लगता है कि जिस तरह से मैं इसे देखता हूँ और श्रीराम शायद चाय पर ऑफलाइन कुछ कहें, हम इस मुद्दे पर और चर्चा कर सकते हैं, कि वे वास्तव में आपके रिश्ते को आगे बढ़ाने के मामले में उत्प्रेरक का काम करते हैं। यदि आप बीते 10 वर्षों के अनुभव को देखें, तो आपको एक उदाहरण देने के लिए, मुझे लगता है कि जब 2014 में प्रधानमंत्री मोदी ऑस्ट्रेलिया आए थे, तो हमारे पास प्रधानमंत्री के रूप में टोनी एबॉट थे, जो फिर से स्कॉट मॉरिसन में बदल गए, वहाँ रूढ़िवादी और फिर अल्बानी, एक उदारवादी, रिश्ते विकसित होते रहे और बढ़ते रहे। प्रधानमंत्री मोदी के इन तीनों के साथ बहुत अच्छे संबंध रहे हैं।

आप संयुक्त राज्य अमेरिका को भी देखें, चाहे वह हाउडी मोदी कार्यक्रम हो, हर कोई श्री मोदी को यह कहने के लिए फटकार रहा था कि, अबकी बार ट्रम्प सरकार। लेकिन जब श्री बाइडेन आते हैं, तो वे कहते हैं कि भारत- अमेरिका साझेदारी आज 21वीं सदी में उनके लिए विश्व की सबसे महत्वपूर्ण साझेदारी है। मैं आपको और भी कई उदाहरण दे सकता हूँ। इसलिए मुझे लगता है कि तथ्य यह है कि हमारे नेतृत्व ने यह स्पष्ट कर दिया है कि जब हमारे प्रधानमंत्री किसी अन्य देश के नेतृत्व से संपर्क करते हैं तो यह उस देश के अपने नेता के जरिए प्रतिनिधित्व के संदर्भ में किया जाता है। यह उस अर्थ में व्यक्तिगत संबंध नहीं है जैसा कि भारत की स्थिति हमेशा से रही है और बांग्लादेश के मामले में भी है।

मुझे लगता है कि बांग्लादेश पर एक सवाल था। भारत हमेशा सत्तारूढ़ सरकार के साथ काम करेगा, चाहे किसी की भी सरकार हो। मुझे लगता है कि हम इसमें पूरी तरह से सफल रहे हैं। मुझे याद है कि 2014 में जब भाजपा के नेता मोदी ने प्रधानमंत्री पद की शपथ ली और तो पार्टी के सत्ता में आने से पहले ही उन्होंने राष्ट्रपति बराक ओबामा से फोन पर बात की थी। देश में कई लोग, कई विश्लेषक और विद्वान थे जिन्होंने कहा कि श्री मोदी के अपमान के कारण उन्हें फोन नहीं उठाना चाहिए लेकिन मुझे लगता है कि जब आपके देश का हित शामिल होता है तो इन व्यक्तिगत पहलुओं को किनारे कर दिया जाता है। मुझे लगता है कि बीते कई सालों में हमने यही देखा है।

महोदया, आपके प्रश्न पर अंतिम टिप्पणी, पियरे ड्रूडो के बारे में, पियरे ड्रूडो के समय संबंध बिल्कुल भी अच्छे नहीं थे। मैं आपको आश्वस्त करना चाहता हूँ, उस समय भी, जो व्यक्ति कनिष्क में बम रखने का जिम्मेदार था, हमने तलविंदर सिंह परमार के प्रत्यर्पण के लिए अनुरोध किया था। जैसा आज हमने 26 लोगों के प्रत्यर्पण का अनुरोध किया है, उमें से किसी का भी जवाब नहीं

दिया गया है या उनके साथ संवेदनशीलता या गंभीरता से व्यवहार नहीं किया गया है। उस सम भी, 1985 में, कनिष्क दुर्घटना से दो साल पहले, हमने तलविंदर सिंह परमार के प्रत्यर्पण के लिए कहा था। ऐसा नहीं किया गया। इसलिए मुझे लगता है कि जहाँ तक कनाडा का सवाल है, हमारी मुख्य सुरक्षा चिंताओं के प्रति बहुत असंवेदनशीलता रही है और यही कारण है कि आप इस प्रकार की समस्याएं देखते हैं।

एक बार फिर मैं आईसीडब्ल्यूए को धन्यवाद देना चाहता हूँ। मैं आप सभी को धन्यवाद देना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि आप सभी हमारे लेखक और आज के पैनल में शामिल सदस्यों का तालियों के साथ धन्यवाद करें। जैसा कि मैंने कहा, यह पढ़ने योग्य बहुत अच्छी किताब है और मुझे पूरा विश्वास है कि यह भारतीय विदेश नीति पर उपलब्ध साहित्य में एक बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान देने वाली है। आप सभी को सफलता की शुभकामनाएं और यहाँ आने के लिए आप सब का एक बार फिर से धन्यवाद।

स्तुति: आपका बहुत- बहुत धन्यवाद, सर। मैं इस अवसर पर चर्चा में भाग लेने के लिए प्रोफेसर आलम और डॉ. त्रिपाठी के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ। राजदूत सज्जनहार द्वारा चर्चा की अध्यक्षता करने और उनकी प्रखर टिप्पणियों के लिए उनका धन्यवाद करती हूँ। आप सभी मेहमानों का स्वागत है, कृपया हमारे साथ चाय का आनंद लें।

अशोक सज्जनहार: धन्यवाद।